ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 1, January - February 2025

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

करौली जिले के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका

राजकुमार बैरवा[1], डॉ. हेमंत मंगल[2]

शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[1]

आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय लोहिया महाविद्यालय, चूरु (राजस्थान), भारत[2]

सारांश

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर्यटन उद्योग केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गया है, बल्कि यह क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का सशक्त स्तंभ बन चुका है। यह न केवल रोजगार सृजन करता है, बल्कि आधारभूत संरचना के विकास, सांस्कृतिक संरक्षण और आय अर्जन का प्रमुख माध्यम भी है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में पर्यटन की संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक हैं, विशेष रूप से राजस्थान जैसे राज्य में, जहाँ का हर जिला ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों से परिपूर्ण है। इसी क्रम में करौली जिला अपनी विशिष्ट धार्मिक और ऐतिहासिक पहचान के कारण विशेष महत्व रखता है। यहाँ स्थित करौली किला, श्री मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी शक्तिपीठ, रंजीत महल तथा कैलादेवी अभयारण्य जैसे स्थल पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। परंतु दुर्भाग्यवश करौली जिले की पर्यटन संपदाएँ अभी तक सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध विकास से वंचित हैं। यह शोध–पत्र राजस्थान के करौली जिले में पर्यटन उद्योग की वर्तमान भूमिका, उसकी संभावनाएँ, आर्थिक योगदान एवं विकासात्मक चुनौतियों का विश्लेषण करता है। करौली धार्मिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण एक ऐसा जिला है, जहाँ पर्यटन के माध्यम से व्यापक आर्थिक सशक्तिकरण की संभावनाएँ मौजूद हैं। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों का उपयोग करते हुए यह पाया गया कि यदि करौली जिले की विरासत स्थलों, धार्मिक तीर्थों और इको–टूरिज्म स्थलों को संरक्षित कर उन्हें योजनाबद्ध रूप से विकसित किया जाए, तो यह न केवल स्थानीय रोजगार और व्यापार को बढ़ावा देगा, बल्कि शासन के राजस्व को भी समृद्ध करेगा। शोध यह भी इंगित करता है कि प्रशासनिक समन्वय, आधारभूत ढांचे का सुदृढ़ीकरण, निजी निवेश की भागीदारी और स्थानीय समुदाय की सक्रिय सहभागिता से करौली जिले को पर्यटन के एक समृद्ध केंद्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, योजनाकारों और पर्यटन शोधकर्ताओं के लिए एक उपयोगी आधार प्रदान करता है, जिससे करौली जैसे ऐतिहासिक जिलों का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके।

मूल शब्द – पर्यटन उद्योग, आर्थिक विकास, सांस्कृतिक संरक्षण, इको–टूरिज्म

प्रस्तावना :

पर्यटन आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली सेवा आधारित उद्योगों में से एक है, जिसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव किसी क्षेत्र की सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और आर्थिक संरचना पर पड़ता है। यह न केवल एक राज्य या राष्ट्र की वैश्विक पहचान को बढ़ाता है, बल्कि रोजगार, व्यापार, आधारभूत संरचना और सांस्कृतिक संरक्षण के माध्यम से सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत जैसे विविधताओं से परिपूर्ण देश में पर्यटन की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं, जो न केवल पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं, बल्कि क्षेत्रीय विकास के सशक्त साधन भी बन सकते हैं। राजस्थान राज्य, अपनी ऐतिहासिक विरासत, भव्य किलों, रंगीन संस्कृति, लोक कलाओं और धार्मिक स्थलों के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस राज्य के अधिकांश जिले जैसे जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर आदि पहले से ही विकसित पर्यटन केंद्र बन चुके हैं। वहीं कुछ जिले, जिनमें पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध संभावनाएं होते हुए भी अपेक्षित विकास से वंचित हैं उनमें करौली जिला प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। करौली जिला पूर्वी राजस्थान में स्थित है, जिसकी स्थापना 1348 ई. में यदुवंशी राजा अर्जुन देव द्वारा की गई थी। यह जिला धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ श्री मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी शक्तिपीठ, करौली किला, रंजीत महल, कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य और चंबल नदी घाटी जैसे महत्वपूर्ण स्थल हैं, जो पर्यटन के विभिन्न आयामों धार्मिक, ऐतिहासिक, विरासत, प्राकृतिक और इको–टूरिज्म को समेटे हुए हैं। परंतु यह तथ्य भी उतना ही सत्य है कि करौली जिले की यह समृद्ध पर्यटन संपदा अभी तक योजनाबद्ध रूप से न तो विकसित की गई है और न ही इसे व्यापक रूप से प्रचारित किया गया है। पर्यटन से प्राप्त होने वाले संभावित आर्थिक लाभ जैसे स्थानीय स्तर पर रोजगार, होटल और रेस्तरां उद्योग का विकास, हस्तशिल्प बाजार का विस्तार, परिवहन सेवाओं में वृद्धि, सरकारी राजस्व में इजाफा आदि आज भी करौली में सीमित ही हैं। ऐसे परिदृश्य में यह आवश्यक हो जाता है कि करौली जैसे जिले में पर्यटन को एक रणनीतिक आर्थिक उपकरण के रूप में देखा जाए और उसके माध्यम से स्थानीय निवासियों की आजीविका, महिला सशक्तिकरण, युवा रोजगार और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित एवं समृद्ध किया जाए। इस शोध–पत्र का उद्देश्य करौली जिले की पर्यटन क्षमताओं का सम्यक विश्लेषण करना है और यह समझना है कि यदि इन्हें व्यावसायिक दृष्टिकोण से, टिकाऊ और समावेशी रूप में विकसित किया जाए, तो यह जिला किस प्रकार आर्थिक रूप से उन्नति कर सकता है। साथ ही यह अध्ययन यह भी प्रतिपादित करता है कि पर्यटन उद्योग के माध्यम से न केवल आर्थिक विकास को गति दी जा सकती है, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनरुत्थान और पर्यावरणीय संतुलन का भी संवाहक बन सकता है।

शोध उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. करौली जिले की पर्यटन संपदाओं की पहचान करना।
2. वर्तमान पर्यटन व्यवस्था और आर्थिक योगदान का विश्लेषण करना।
3. पर्यटन के माध्यम से रोजगार एवं व्यवसाय के अवसरों को समझना।
4. पर्यटन उद्योग के माध्यम से आर्थिक विकास की संभावनाओं का विश्लेषण करना।
5. चुनौतियों और सुधारात्मक सुझावों को प्रस्तुत करना।

अनुसंधान पद्धति एवं आंकड़ों के स्रोत :

इस शोध में वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान पद्धतियों का समन्वय करते हुए कार्य किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य करौली जिले में पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति, उसके संभावित प्रभाव, आर्थिक योगदान तथा क्षेत्रीय विकास में उसकी भूमिका का समग्र विश्लेषण करना है। इसलिए शोध की प्रकृति मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) रही है। शोध की प्राथमिक इकाई करौली जिला रहा, जहाँ के धार्मिक, ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक स्थलों को केंद्र में रखकर डेटा संग्रहित किया गया। संग्रहीत डेटा को विषयवस्तु (Content) के आधार पर वर्गीकृत कर विषयवार व्याख्या की गई है। उदाहरण, तुलना और साक्ष्य आधारित दृष्टिकोण अपनाते हुए निष्कर्षों तक पहुँचा गया। शोध में प्रयुक्त विधियों का चयन उद्देश्य की पूर्ति और यथार्थ चित्रण के लिए किया गया है। इस शोध में प्रयास किया गया है कि संकलित जानकारी क्षेत्रीय यथार्थ को प्रतिबिंबित करे और नीति–निर्माताओं, योजनाकारों एवं शोधकर्ताओं को एक उपयोगी आधार प्रदान कर सके।

द्वितीयक स्रोत :

- राजस्थान पर्यटन विभाग की वार्षिक रिपोर्टें
- करौली जिला प्रशासन की वेबसाइट एवं योजनाओं से संबंधित दस्तावेज
- भारत सरकार की योजनाएँ (Swadesh Darshan,PRASAD,Incredible India Campaign)
- समाचार पत्रों, शोध–पत्रों, पुस्तकों और पत्रिकाओं से प्राप्त आंकड़े व विचार
- सांख्यिकीय डेटा जैसे, वार्षिक पर्यटक आगमन, स्थानीय रोजगार दर, जिला घरेलू उत्पाद (DDP) आदि।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

अध्ययन क्षेत्र :

राजस्थान राज्य का करौली जिला एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य और सांस्कृतिक विविधता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला पूर्वी राजस्थान में स्थित है और यह धौलपुर, सवाई माधोपुर तथा भरतपुर जैसे जिलों से घिरा हुआ है। अरावली की पहाड़ियों से घिरे इस जिले की सीमाएं चंबल और बावन नदी जैसे जल स्रोतों से भी जुड़ी हुई हैं, जो इसके पारिस्थितिक संतुलन और प्राकृतिक संपदा को समृद्ध बनाती हैं। यह जिला $26^{0}3'$ से $26^{0}49'$ उत्तरी अक्षांश तक तथा $76^{0}35'$ से $77^{0}26'$ पूवीदेशान्तर के मध्य स्थित है। जिले की सीमाएं उत्तर व उत्तर–पश्चिम में दौसा जिले, उत्तर–पूर्व में भरतपुर जिले, पूर्व में धौलपुर जिले, दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश तथा दक्षिण–पश्चिम में सवाईमाधोपुर जिले से लगती है। इस प्रकार करौली जिले से मध्य प्रदेश तथा भरतपुर धौलपुर, सवाईमाधोपुर तथा दौसा जिले की सीमायें मिलती है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5043 वर्ग किलोमीटर है जिसे 5 उपखण्डों में बांटा गया है। जिले मे 5 पंचायत समितियाँ एवं 6 तहसीलें 2 उप तहसीलें एवं 3 नगर पालिकायें हैं।

करौली की जलवायु अर्ध–शुष्क है, जहाँ गर्मियों में अत्यधिक गर्मी एवं सर्दियों में हल्की ठंड पड़ती है। वर्षा का औसत अपेक्षाकृत कम है, परंतु मानसून में जिले के कुछ हिस्सों में हरियाली और प्राकृतिक दृश्य अत्यंत मनोहारी हो जाते हैं। कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य, जो रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान से जुड़ा है, यहाँ की जैव विविधता का प्रमुख केंद्र है और यह करौली को इको–टूरिज्म की दृष्टि से विशिष्ट बनाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से करौली जिला एक प्राचीन ऐतिहासिक और धार्मिक परंपरा का वाहक है। इसकी स्थापना 14वीं शताब्दी में यदुवंशी राजपूत शासकों द्वारा की गई थी, जो स्वयं को भगवान श्रीकृष्ण का वंशज मानते थे। यह परंपरा आज भी यहाँ की धार्मिक संरचनाओं में स्पष्ट दिखाई देती है। श्री मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी शक्तिपीठ, और महावीर जैन मंदिर जैसे धार्मिक स्थल न केवल आध्यात्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि करौली की सांस्कृतिक विरासत को भी जीवंत रखते हैं। यहाँ के मेले, त्यौहार, लोकनृत्य, पारंपरिक पहनावा और संगीत, इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को दर्शाते हैं। विशेष रूप से कैलादेवी का मेला, जो चैत्र नवरात्रि में आयोजित होता है, लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। वहीं करौली किले और रंजीत महल जैसे स्थापत्य चमत्कार जिले के ऐतिहासिक वैभव की गवाही देते हैं। इस प्रकार, करौली जिला न केवल एक भौगोलिक रूप से विविध और प्राकृतिक रूप से संपन्न क्षेत्र है, बल्कि यह सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली इतिहास से जुड़ा हुआ है। यह सामंजस्य करौली को राजस्थान के अन्य जिलों से अलग और विशिष्ट बनाता है।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

KEY MAP OF KARAULI DISTRICT OF RAJASTHAN

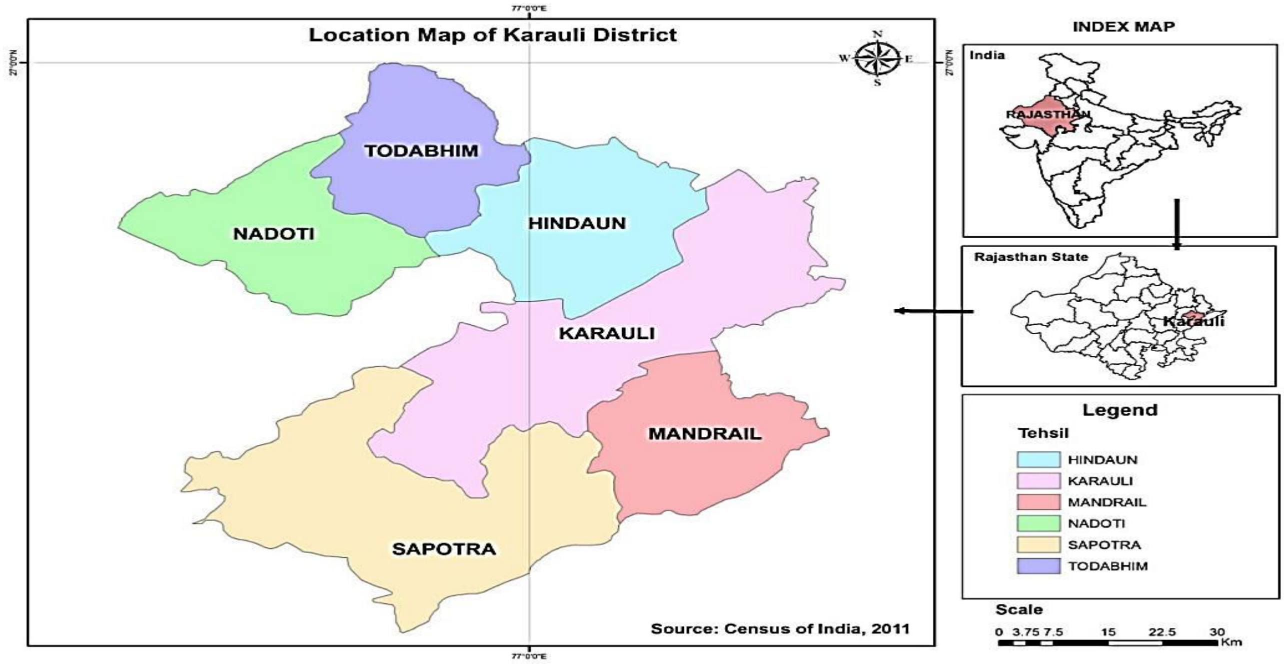

करौली जिले की पर्यटन विशेषताएँ :

राजस्थान राज्य का करौली जिला एक ऐसा क्षेत्र है, जो ऐतिहासिक गौरव, धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत समागम प्रस्तुत करता है। यद्यपि करौली देश और दुनिया के प्रमुख पर्यटन मानचित्र पर अपेक्षाकृत कम चर्चित है, फिर भी इसकी आंतरिक विशेषताएँ इसे एक उभरते हुए पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करने की भरपूर क्षमता रखती हैं। करौली की स्थापना 14वीं शताब्दी में यदुवंशी शासक अर्जुन देव द्वारा की गई थी। यह क्षेत्र अपनी पौराणिक मान्यताओं, वैभवशाली राजपूत संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ का श्री मदन मोहन मंदिर (श्रीकृष्ण को समर्पित), कैलादेवी शक्तिपीठ (सिद्ध शक्ति स्थल), तथा महावीर जैन मंदिर धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु दर्शन हेतु आते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से करौली का सबसे प्रमुख आकर्षण करौली किला है, जो राजस्थानी स्थापत्य की अनूठी शैली, भित्ति चित्रों और पारंपरिक स्थापत्य कलाओं का जीवंत उदाहरण है। किले के भीतर स्थित रंजीत महल, मच्छी भवन, और शाही चौक पर्यटकों के लिए अत्यंत आकर्षक स्थल हैं। प्राकृतिक पर्यटन की दृष्टि से करौली में कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य स्थित है, जो रणथंभौर टाइगर रिजर्व से जुड़ा हुआ है। यहाँ की जैव विविधता, वन्यजीव और पहाड़ी भू–दृश्य इको–टूरिज्म की अपार संभावनाएं प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त चम्बल नदी का किनारा, घाटियाँ और बीहड़ क्षेत्र रोमांचक व साहसिक पर्यटन के लिए अनुकूल है।

करौली जिले के आर्थिक विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका :

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में पर्यटन उद्योग को आर्थिक विकास का एक प्रमुख उपकरण माना जा रहा है। यह क्षेत्र केवल मनोरंजन या भ्रमण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि रोजगार सृजन, स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन, आधारभूत संरचना के विकास, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और सरकारी राजस्व में वृद्धि जैसे बहुआयामी आर्थिक लाभ प्रदान करता है। भारत जैसे सांस्कृतिक विविधताओं से समृद्ध देश में पर्यटन उद्योग ने हाल के वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है। राजस्थान, जो सदियों से अपनी विरासत, महलों, किलों, मंदिरों और मेलों के लिए जाना जाता है, भारत के सबसे अधिक पर्यटक आकर्षण वाले राज्यों में एक है। इसी राज्य का करौली जिला, जो ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक विविधताओं से भरपूर है, एक उभरते हुए पर्यटन केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। करौली का श्री मदन मोहन मंदिर, कैलादेवी शक्तिपीठ, करौली किला, रंजीत महल, कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य और चंबल नदी क्षेत्र ऐसे स्थल हैं जो धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और इको–टूरिज्म के विविध आयामों को समेटे हुए हैं। इन स्थलों को सुनियोजित रूप से विकसित किया जाए, तो पर्यटन उद्योग करौली जिले के पाँच प्रमुख आर्थिक पहलुओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव डाल सकता हैरू

- **रोजगार सृजन** – पर्यटन क्षेत्र प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर प्रदान करता है। एक अध्ययन के अनुसार, भारत में प्रत्येक एक लाख पर्यटक लगभग 78 प्रत्यक्ष और 150 अप्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न करते हैं। करौली जैसे जिले में, जहाँ शहरी औद्योगिक विकास सीमित है, पर्यटन एक वैकल्पिक और स्थायी रोजगार साधन बन सकता है। यहाँ स्थानीय युवाओं को टूर गाइड, होटल स्टाफ, ड्राइवर, हस्तशिल्प विक्रेता, सफाईकर्मी, फोटोग्राफर जैसे कार्यों में प्रशिक्षण देकर नियोजित किया जा सकता है। कैलादेवी मंदिर और करौली किला जैसे स्थलों पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु आते हैं, जिन्हें सेवा देने हेतु स्थानीय जनशक्ति की आवश्यकता रहती है।
- **स्थानीय व्यापार एवं कुटीर उद्योग का प्रोत्साहन** – पर्यटक क्षेत्र में आने से न केवल सेवा क्षेत्र को बढ़ावा मिलता है, बल्कि स्थानीय उत्पादों जैसे हस्तशिल्प, लकड़ी की मूर्तियाँ, पारंपरिक परिधान, प्रसाद सामग्री, लोक संगीत वाद्य आदि की मांग भी बढ़ती है। करौली जिले की महिलाएं समूहों के माध्यम से आचार, हर्बल दवाएँ, हस्तनिर्मित पूजा सामग्री जैसे उत्पाद तैयार करती हैं, जिनका पर्यटन के माध्यम से व्यापक विपणन संभव हो सकता है। इसके साथ ही स्थानीय बाजारों, भोजनालयों और दुकानों की आय में वृद्धि होती है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिलता है।
- **आधारभूत संरचना का विकास** – पर्यटन विकास के साथ–साथ सड़कें, बिजली, जल, इंटरनेट, चिकित्सा और सफाई जैसे बुनियादी ढांचे का विकास भी अनिवार्य रूप से जुड़ा होता है। सरकार द्वारा स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं के अंतर्गत जिन क्षेत्रों में पर्यटक वृद्धि देखी गई है, वहाँ अधोसंरचना में 30 प्रतिशत तक सुधार दर्ज किया गया है। करौली जिले में यदि इन योजनाओं के अंतर्गत पर्यटन स्थल

चुने जाएँ, तो वहाँ तक पहुँचने के लिए बेहतर सड़कें, विश्राम गृह, पर्यटक सूचना केंद्र, सुलभ शौचालय आदि का विकास स्वतः होगा, जिससे स्थानीय नागरिकों को भी समान रूप से लाभ मिलेगा।

- **सांस्कृतिक संरक्षण एवं सामाजिक सशक्तिकरण** – पर्यटन केवल आर्थिक लाभ का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहरों के पुनर्जीवन और संरक्षण का भी प्रेरक है। करौली जिले में लोकनृत्य, लोकगीत, वाद्य यंत्र, त्योहार, मेले जैसे सांस्कृतिक उपादान विद्यमान हैं, जो समय के साथ उपेक्षित हो रहे हैं। यदि इन पर आधारित सांस्कृतिक संध्या, लोक उत्सव, हेरिटेज वॉक, कला एवं शिल्प मेले आयोजित किए जाएँ, तो न केवल इन्हें आर्थिक आधार मिलेगा, बल्कि युवा पीढ़ी इनसे जुड़कर अपनी सांस्कृतिक पहचान को पुनः प्राप्त कर सकेगी। इससे महिलाएँ और अल्पसुविधा वर्ग के लोग भी सांस्कृतिक उद्यमिता के माध्यम से सशक्त बन सकते हैं।
- **सरकारी राजस्व में वृद्धि** – पर्यटन स्थलों से प्रवेश शुल्क, व्यापार कर, वाहन टैक्स, होटल टैक्स आदि के माध्यम से सरकार को प्रत्यक्ष राजस्व प्राप्त होता है। राजस्थान सरकार को वर्ष 2022–23 में पर्यटन से ₹6,000 करोड़ से अधिक का राजस्व प्राप्त हुआ, जिसमें धार्मिक पर्यटन का भी बड़ा योगदान रहा। करौली जिले में कैलादेवी मेले के दौरान अस्थायी व्यवसाय, पार्किंग शुल्क, स्टॉल लाइसेंस आदि से स्थानीय प्रशासन को लाखों रुपये की आय होती है। यदि इस आय का पुनर्निवेश पर्यटन प्रबंधन में किया जाए, तो यह चक्रीय आर्थिक विकास का आदर्श उदाहरण बन सकता है।

निष्कर्ष :

करौली जिला धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण एक समृद्ध क्षेत्र है, जिसकी पर्यटन विशेषताओं में न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के पर्यटकों को आकर्षित करने की अपार संभावनाएं निहित हैं। यह जिला राजस्थान के उन गिने–चुने क्षेत्रों में शामिल है, जहाँ एक साथ धार्मिक पर्यटन (कैलादेवी, मदन मोहन मंदिर), ऐतिहासिक पर्यटन (करौली किला, रंजीत महल), प्राकृतिक पर्यटन (कैलादेवी अभयारण्य, चंबल नदी), और सांस्कृतिक पर्यटन (लोक उत्सव, मेले, हस्तशिल्प) के सभी तत्व उपलब्ध हैं। हालाँकि करौली में पर्यटन की वर्तमान स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है, फिर भी इसमें निहित संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक हैं। इसकी प्रमुख चुनौतियाँ जैसे अधोसंरचना की कमी, प्रचार–प्रसार का अभाव, प्रशासनिक उदासीनता एवं निजी निवेश में रुचि की न्यूनता यदि रणनीतिक प्रयासों द्वारा दूर की जाएँ, तो करौली को राजस्थान के अन्य विकसित पर्यटन जिलों की श्रेणी में लाया जा सकता है। यह भी उल्लेखनीय है कि पर्यटन के सतत एवं समावेशी विकास के लिए स्थानीय समुदाय की भागीदारी, युवाओं को प्रशिक्षण, PPP मॉडल को प्रोत्साहन, डिजिटल प्रचार, और राज्य व केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ अनिवार्य है। करौली जैसे अर्ध–ग्रामीण जिले के लिए पर्यटन एक ऐसा साधन सिद्ध हो सकता है, जो आर्थिक सशक्तिकरण, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सामाजिक भागीदारी को समन्वित करते हुए एक स्थायी विकास मॉडल की स्थापना कर सके। अतः यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि करौली जिले के लिए पर्यटन केवल एक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक संभावनाशील परिवर्तनकारी शक्ति है, जो यदि

नियोजित और प्रतिबद्ध प्रयासों से विकसित की जाए, तो यह जिले की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित कर सकती है।

References:

1. Bhaskar, Dainik. "Karauli Me Kaladevi Mela Ka Ayojan Aur Arthik Prabhav." *Dainik Bhaskar*, 18 Mar. 2024, p. 6.
2. Jain, Kavita. "Heritage Tourism and Regional Growth: A Case Study of Karauli Fort." *Indian Journal of Heritage Management*, vol. 5, no. 2, 2023, pp. 88–101.
3. Karauli District Administration. *District Karauli Official Website*. Government of Rajasthan, https://karauli.rajasthan.gov.in/. Accessed 25 June 2025.
4. Meena, Suresh Kumar. "Tourism Potential in Eastern Rajasthan: A Study of Karauli District." *Journal of Regional Studies*, vol. 12, no. 1, 2022, pp. 56–65.
5. Ministry of Tourism, Government of India. *Incredible India: Tourism Statistics 2023*. Govt. of India, 2023.
6. Ministry of Tourism. *Swadesh Darshan Scheme Guidelines*. Government of India, 2022.
7. Rajasthan Patrika. "Karauli Ke Itihasik Sthal Aur Vikas Ki Disha." *Rajasthan Patrika*, 5 Jan. 2023, p. 4.
8. Rajasthan Tourism Department. *Annual Report 2022-2023*. Government of Rajasthan, 2023.
9. Sharma, B. L. *Rajasthan Ki Sanskritik Virasat*. Jaipur: Rajasthan Granth Akademi, 2020.
10. Singh, Ramesh. *Tourism and Economic Development in India*. New Delhi: Discovery Publishing House, 2021.

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com